निष्कर्ष एवं सारांश

प्रस्तावना :

प्रस्तुत शोध ग्रामीण वृद्धजनों की मनोसामाजिक एवं समायोजन संबंधी समस्या का अध्ययन हैं। जिसके अंतर्गत चयनित गांवो के उत्तरदाताओं की सामाजिक-आर्थिक, मनोसामाजिक एवं समायोजन संबंधी समस्याओं की जानकारी प्राप्त की गयी हैं। तमाम महत्वपूर्ण पहलुओं को शामिल किया गया हैं। प्रस्तुत शोध अध्ययन के दौरान प्राप्त की गई प्राथमिक तथ्यों पर आधारित हैं, जिनमें सेलू तहसील के कुछ गांवों के वृद्धजनों की सामाजिक-आर्थिक, मनोसामाजिक एवं समायोजन संबंधी समस्या को महत्व दिया गया हैं। जिसके माध्यम से शोध अध्ययन के सभी मूलभूत पहलुओं को सरलता से समझा जा सके। साथ ही शोध अध्ययन की समग्र बिंदु अर्थात निष्कर्ष को शामिल भी किया गया हैं। जो अध्ययन शोधार्थी द्वारा दिए गए विषय संबंधी महत्वपूर्ण तथ्य हैं, जिसमें शोध की विश्वनीयता व उसकी उपयोगिता को रेखांकित किया जा सके।

शोध पद्धति का सारांश

अध्ययन का शीर्षक ग्रामीण वृद्धजनों की मनोसामाजिक एवं समायोजन संबंधी समस्याएँ :- सेलू तहसील जिला वर्धा का क्षेत्रीय अध्ययन किया गया हैं। महाराष्ट्र में वर्धा जिला के अंतर्गत आनेवाले सेलू तहसील के कुछ गांवों का प्रस्तुत अध्ययन का भौगोलिक क्षेत्र हैं। प्रस्तुत शोध में ग्रामीण वृद्धजनों की मनोसामाजिक एवं समायोजन संबंधी समस्याएँ सेलू तहसील के कुछ गांव का विभिन्न पहलुओं का अध्ययन करके संग्रहित तत्वों का विस्तृत वर्णन किया हैं। इसलिए शोध मुख्यत: वर्णनात्मक शोध प्ररचना में आता हैं, इसके अंतर्गत उत्तरदाताओं से प्राप्त यह अध्ययन ग्रामीण वृद्धजनों की मनोसामाजिक एवं समायोजन संबंधी विभिन्न जानकारियों को प्राथमिक स्त्रोत के रूप में वर्णन किया गया हैं। जिससे सभी प्राप्त आंकड़े मात्रात्मक रूप में हैं, अत: स्वरुप में हैं। अध्ययन के दौरान प्राप्त तथ्यों का विश्लेषण किया गया हैं। इस प्रक्रिया से प्रमुख समस्या के कारणों और उसके संसाधनों की जानकारी प्राप्त होती हैं। इन्हीं संसाधनों को ध्यान में रखते हुए उचित समाजकार्य हस्तक्षेप सुझाया गया हैं। अत: यह प्रस्तुत शोध जिसमें समस्या के विषय में अध्ययन किया गया है। प्रस्तावित शोध अध्ययन में निदानात्मक शोध प्ररचना का भी प्रयोग किया गया हैं। प्रस्तावित शोध अध्ययन में सर्वेक्षण पद्धति पर आधारित हैं। इसमें प्रतिचयन करके साक्षात्कार द्वारा तथ्यों का संकलन किया गया हैं। प्रस्तुत शोध में सेलू तहसील के ग्रामीण व्रुद्धोजनों को शोध अध्ययन की पूर्ति हेतु अध्ययन इकाई माना गया हैं। प्रस्तुत शोध कार्य में प्राथमिक स्त्रोत द्वारा तथ्यों का संकलन करने के लिए संरचित साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया हैं। द्वितीय स्त्रोत के लिए लाइबरी मेथड्स का प्रयोग किया गया हैं। तथ्यों का विश्लेषण करने हेतु तथ्यों के स्वरुप सम्बंधित संगणक अनुप्रयोगों का उपयोग किया गया हैं। आंकड़ो को विश्लेषण करने के लिए SPSS टूल का प्रयोग किया गया हैं।

प्रमुख शोध :

अध्याय - 4 उत्तरदाताओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति

सारांश:

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित तथ्य पाए गए :

- 58.3 आधे से ज्यादा उत्तरदाता का जेंडर पुरुष हैं।
- 87.8 एक तिहाई से जायदा उत्तरदाता वरिष्ठ नागरिक (60-70) वर्ष के हैं।
- 58.3 आधे से ज्यादा उत्तरदाता संयुक्त परिवार के हैं।
- 44.3 अधिकतर उत्तरदाता अनुसूचित जनजाति जाति श्रेणी से हैं।
- 88.7 एक तिहाई से ज्यादा उत्तरदाता हिंदू धर्म से हैं।
- 33.0 अधिकतर उत्तरदाता का साक्षर पूर्व प्राथमिक स्तर हैं।
- 40.9 अधिकतर उत्तरदाता खेत मजदूरी करने वाले हैं।

अध्याय - 5 उत्तरदाताओं की विविध मनोसामाजिक समस्या

सारांश :

- मैं अवसाद में रहता हूँ इस कथन से तक़रीबन आधे 51.3 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत हैं।
- मैं अपने जीवन से संतुष्ट नहीं हूँ यह कथन से तक़रीबन आधे से ज्यादा 60.0 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत हैं। इससे यह स्पष्ट हुआ कि 60.0 आधे से ज्यादा वृद्धजन अपने जीवन से संतुष्ट हैं।
- मैं अपने आपको असुरक्षित महसूस करता हूँ इस कथन से तक़रीबन आधे से ज्यादा 55.7 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत हैं। इसका मतलब वृद्धजन अपने आपको सुरक्षित महसूस करते हैं।
- मैं हताश एवं अकेलापन महसूस करता हूँ इस कथन से 46.0 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत हैं। इससे स्पष्ट हुआ कि वृद्धजन अपने आपको अकेलापन महसूस नहीं करते हैं।
- मैं अपने आपको असहाय महसूस करता हूँ इस कथन से 49.6 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत हैं। इससे यह पता चला कि वृद्धजन अपने आपको असहाय महसूस नहीं करते हैं।
- मैं अपनी याददाश्त में कमी महसूस करता हूँ इस कथन से यह स्पष्ट हुआ कि 48.7 अधिकतर उत्तरदाता अपनी याददाश्त में कमी महसूस करते है।
- किसी भी विषय पर मैं शीघ्र निर्णय नहीं ले पाता हूँ इस कथन से तक़रीबन 51.3 अधिकतर उत्तरदाता किसी भी विषय पर शीघ्र निर्णय नहीं ले पाते हैं।

- मैं निरंतर चिंता में रहता हूँ इस कथन से तक़रीबन 47.8 अधिकतर उत्तरदाता निरतर चिंता में रहते हैं।
- मुझमें अलगाव की भावना उत्पन्न हो रही हैं इस कथन से तक़रीबन 51.3 अधिकतर उत्तरदाता में अलगाव की भावना उत्पन्न नहीं होती।
- सामान्यत: मैं दुखी रहता हूँ इस कथन से तक़रीबन 45.2 अधिकतर उत्तरदाता सामान्यत: दुखी रहते हैं।
- वृद्धावस्था के कारण मुझे पर्याप्त नींद नहीं आती हैं इस कथन से तक़रीबन 56.5 आधे से ज्यादा प्रतिशत उत्तरदाता को वृद्धावस्था के कारण पर्याप्त नींद नहीं आती है।
- मैं खुद को दूसरों से अलग करने लगा हूँ इस कथन से तक़रीबन 60.0 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत हैं इससे यह स्पष्ट हुवा कि वृद्धजन खुदको दूसरों से अलग नहीं करते हैं।
- मेरे स्वभाव में चिड़चिड़ापण आने लगा हैं इस कथन से तक़रीबन 54.8 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत हैं इससे यह स्पष्ट होता हैं कि व्रुद्धोजनों के स्वभाव में चिड़चिड़ापण आने लगा हैं यह स्पष्ट होता हैं।
- मैं प्राय: तनावग्रस्त रहता हूँ इस कथन से तक़रीबन 39.1 प्रतिशत उत्तरदाता तनावग्रस्त रहते हैं।
- मैं मादक पदार्थों का सेवन करता हूँ इस कथन से तक़रीबन 60.0 आधे से ज्यादा प्रतिशत उत्तरदाता असहमत हैं। इससे यह पता चला कि वृद्धजन मादक पदार्थ का सेवन नहीं करते।
- मैं अपने मित्रों को समय नहीं डदे पाता हूँ इस कथन से तक़रीबन 50.4 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत हैं इससे यह पता चला हैं की वृद्धजन अपने मित्रों को समय नहीं दे पाते हैं।
- मैं अब ध्यान केंद्रित नहीं कर पाता हूँ इस कथन से तक़रीबन आधे से ज्यादा 59.1 प्रतिशत उत्तरदाता ध्यान केंद्रित नहीं कर पाते हैं।
- दुसरे लोगो से मैं मेल-व्यवहार बनाने से कतराता हूँ यह कथन से तक़रीबन 48.7 प्रतिशत उत्तरदाता मेल-व्यवहार बनाने से कतराते हैं।

उत्तरदाताओं का समायोजन

सारांश:

- मैं अपने घर के आस-पास होने वाले सामाजिक कार्यक्रमों में सहभागी होने लगा हूँ इसमें तक़रीबन आधे से ज्यादा 55.7 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत हैं।
- खाली समय बिताने हेतु मैं आजकल अपने मित्रगणों के साथ ज्यादा समय बिताने लगा हूँ 50.4 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत हैं आजकल अपने मित्रगणों के साथ ज्यादा समय बिताने लगे हैं।

- मैं नए मित्रगण बनाने के प्रयास करने लगा हूँ इस कथन से 43.5 अधिकतर उत्तरदाता सहमत हैं मित्रगण बनाने के प्रयास करने लगे हैं।
- खाली समय में मैं धार्मिक कार्यो में सहभागी होने लगे हूँ इस कथन से 50.4 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत हैं खाली समय में धार्मिक कार्यो में सहभागी होने लगे हैं।
- समाज में अपने योगदान के बारे में मैं आजकल सोचने लगा हूँ 51.3 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत हैं। समाज में अपने योगदान के बारे में मैं आजकल सोचने लगे हैं।
- परिवार के सदस्यों के बिच मैं अपने आपको सुरक्षित महसूस करने लगा हूँ यह कथन से तक़रीबन 61.7 आधे से ज्यादा प्रतिशत उत्तरदाता सहमत हैं वृद्धजन परिवार के सदस्यों के बिच अपने आपको सुरक्षित महसूस करने लगे हैं।
- समाज में मैं खुद को सुरक्षित महसूस करने लगा हूँ इस कथन से तक़रीबन 46.1 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत हैं। इससे यह पता चला की समाज में मैं खुद को सुरक्षित महसूस करने लगे।
- मैं पारिवारिक निर्णय अब घर के युवाओं के साथ मिलकर लेने लगा हूँ इस कथन तक़रीबन 53.0 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत हैं वृद्धजन पारिवारिक निर्णय अब घर के युवाओं के साथ मिलकर लेने लगे हैं।
- आजकल मैं स्वयं के लिए समय निकालने लगा हूँ। इस कथन से तक़रीबन 60.9 आधे से ज्यादा प्रतिशत उत्तरदाता सहमत हैं इससे यह पता चला की वृद्धजन आजकल स्वयं के लिए निकलने लगे हैं।
- आजकल मैं अधिकांश समय लोगों के साथ बिताना पसंद करने लगा हूँ इस कथन से 60.9 आधे से ज्यादा उत्तरदाता सहमत हैं इससे यह पता चलता हैं कि वृद्धजन आजकल अधिकांश समय लोगों के साथ बिताना पसंद करने लगे हैं।

उत्तरदाताओं का आर्थिक समायोजन

सारांश:

- मैंने अपनी आवश्कताएँ सीमित कर दी हैं इस कथन से तक़रीबन 46.1 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत हैं इससे यह पता चला कि वृद्धजनों ने अपनी आवश्कताएँ सीमित कर दी हैं।
- मैंने अपने व्यक्तिगत खर्चों को सीमित कर दिया हैं यह कथन से तक़रीबन 70.4 आधे से ज्यादा प्रतिशत उत्तरदाता सहमत हैं इससे यह प्राप्त हुआ की वृद्धजनों ने अपने व्यक्तिगत खर्चों को सिमित कर दिया हैं।
- मैं घर के आर्थिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करता हूँ इस कथन से तक़रीबन आधे से ज्यादा 60.0 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत हैं। इससे इस स्पष्ट हुआ कि घर के आर्थिक मामलों में हस्तक्षेप करते हैं।

- मैं बच्चों द्वारा जेब खर्च के लिए दी गई राशि से संतुष्ट रहने लगा हूँ इस कथन से तक़रीबन 45.2 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत हैं इससे यह प्राप्त हुआ कि वृद्धजन अपने बच्चों द्वारा जेब खर्च के लिए दी गई राशि से संतुष्ठ रहने लगे हैं।
- स्वयं की बचत से मैं अपना व्यक्तिगत खर्चों हेतु मैं मजदूरी/प्रायवेट जॉब करने लगा हूँ यह कथन से तक़रीबन 48.7 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत हैं इससे यह पता चलता हैं कि वृद्धजन परिवार एवं स्वयं के खर्च हेतु मैं मजदूरी/प्रायवेट जॉब करने लगे हैं।
- मैं अपने पैसों को हिसाब बच्चों को देने लगा हूँ इस कथन से तक़रीबन आधे से ज्यादा 63.5 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत हैं इससे यह पता चलता हैं कि वृद्धजन अपने पैसों का हिसाब बच्चों को नहीं देते।

परिकल्पना का परीक्षण :

1.वृद्धजन स्त्रियों की तुलना में पुरुषों को अधिक समस्या हैं।

सारणी 5.2 में यह दर्शाया कि पुरुष वृद्धजनों 12.5 प्रतिशत उत्तरदाताओं को ज्यादा समस्या का सामना करना पडता हैं जबकि पुरुष वृद्धजनों में ऐसा एक भी उत्तरदाता नहीं हैं जिसे समस्या का सामना न करना पड़ता हो प्राप्त तथ्यों से यह ज्ञात होता हैं कि उत्तरदाताओं को आनेवाली समस्या उनके जीवनकाल से प्रभावित होती हैं। सारणी में Chi-Square Test के माध्यम से स्पष्ट होता हैं कि Calculative value of Chi-Square 2.188^{a} हैं। 2.188^{a} हैं । Degree of freedom 2 हैं तथा Level of significance .335 हैं जो कि .05 से ज्यादा हैं। इस आधार पर यह कहाँ जा सकता हैं कि उपर्युक्त सारणी में पाए गए तथ्य यथार्थपूर्ण हैं इस आधार पर शून्य प्राप्त प्राकल्पना को स्वीकार करते हुए शोध अध्ययन की परिकल्पना "उत्तरदाता वृद्धजनों को ज्यादा समस्या का सामना करना पड़ता हैं। सारणी 5.2 में 1 सेल्स में मानक गणना 5 से कम होने के कारण Chi-Square के परिणामों को मान्य करने में बाधा उत्पन्न होती हैं।

2. वरिष्ठ नागरिक और मध्यम वरिष्ठ नागरिक की तुलना में अति वरिष्ठ नागरिक को समस्या अधिक हैं।

सारणी 5.3 में यह दर्शाया गया कि अति वरिष्ठ नागरिक 33.3 प्रतिशत उत्तरदाताओं को ज्यादा समस्या का सामना करना पड़ता हैं जबकि अति वरिष्ठ नागरिक उत्तरदाताओं में ऐसा एक भी उत्तरदाता नहीं जिन्हें ज्यादा समस्या का सामना करना पड़ता हैं । प्राप्त तथ्यों से यह ज्ञात होता हैं कि उत्तरदाताओं को आनेवाली समस्या उनके जीवनकाल से प्रभावित हो रही हैं। सारणी में Chi-Square Tests के माध्यम से स्पष्ट होता हैं कि Calculative value of Chi-Square .5.861^{a} हैं । Degree of freedom 4 हैं एवं Leval of significance .210 हैं जोकि .05 ज्यादा हैं। इस आधार पर यह कहाँ जा सकता हैं कि उपर्युक्त सारणी में पाए गए तथ्य यथार्थपूर्ण नहीं हैं। इस आधार पर शून्य प्राप्त प्राकल्पना को स्वीकार करते हुए शोध अध्ययन

की परिकल्पना "उत्तरदाताओं की वरिष्ठ नागरिक तथा मध्यम वरिष्ठ नागरिक की तुलना में अति वरिष्ठ नागरिक ज्यादा समस्या का सामना करना पड़ता हैं।" यह स्थापित नहीं होती हैं। सारणी 5.3 में 1 सेल्स में मानक गणना 5 से कम होने के कारण Chi-Square Test के परिणामों को मान्य करने में बाधा उत्पन्न होती हैं।

3. वृद्धजन स्त्रियों कि तुलना में वृद्धजन पुरुषों को ज्यादा समायोजन करना पड़ता हैं।

सारणी 5.5 में यह दर्शाया गया कि वृद्धजन पुरुष वर्ग 47.8 अधिकतर उत्तरदाताओं को ज्यादा समस्या का सामना करना पड़ता हैं जबकि वृद्धजन पुरुष उत्तरदाताओं में ऐसा एक भी उत्तरदाता नहीं हैं जिन्हें ज्यादा समस्या का सामना न करना पड़ता हैं प्राप्त तथ्यों से यह ज्ञात होता हैं कि उत्तरदाताओं को आनेवाली समस्या उनके जीवनकाल से प्रभावित हो रही हैं। सारणी में Chi-Square Tests के माध्यम से स्पष्ट होता हैं कि Calculative value of Chi-Square1.768[a] हैं। Degree of freedom 2 हैं एवं level of significance .413 जोकि .05 से ज्यादा हैं। इस आधार पर यह कहाँ जा सकता हैं कि उपर्युक्त सारणी में पाए गए तथ्य यथार्थपूर्ण नहीं हैं। इस आधार पर शून्य प्राप्त प्राकल्पना को स्वीकार करते हुए शोध अध्ययन कि परिकल्पना "उत्तरदाताओं कि स्त्रियों की तुलना में पुरुषों को ज्यादा समस्या का सामना करना पड़ता हैं।" यह स्थापित नहीं होती हैं। सारणी 5.5 में 1 सेल्स में मानक 5 से कम होने के कारण Chi-Square Test परिणामों को मान्य करने में बाधा उत्पन्न होती हैं।

4.अति वरिष्ठ नागरिक और मध्यम वरिष्ठ नागरिक के तुलना में वरिष्ठ नागरिक को ज्यादा समायोजन करना पड़ता हैं।

सारणी 5.6 में यह दर्शाया गया कि उत्तरदाताओं में वरिष्ठ नागरिक 39.6 अधिकतर उत्तरदाताओं को ज्यादा समस्या का सामना करना पड़ता हैं जबकि वरिष्ठ नागरिक में ऐसा एक भी उत्तरदाता नहीं हैं जिन्हें ज्यादा समस्या का सामना न करना पड़ता हैं। प्राप्त तथ्योंसे यह ज्ञात होता हैं कि उत्तरदाताओं को आनेवाली समस्या उनके जीवनकाल से प्रभावित हो रही हैं । सारणी में Chi-Square Tests के माध्यम से स्पष्ट होता है कि Calculative value of Chi-Square10.776[a] हैं। Degree of freedom 4 हैं एवं level of significance.029 हैं जो कि 0.5 से ज्यादा है। इस आधार पर यह कहा जा सकता हैं कि उपर्युक्त सारणी में पाए गए तथ्य यथार्थपूर्ण नहीं हैं। इस आधार पर शून्य प्राप्त प्राकल्पना को स्वीकार करते हुए शोध अध्ययन कि परिकल्पना "उत्तरदाताओं की अतिवरिष्ठ नागरिक और मध्यम नागरिक के तुलना में वरिष्ठ नागरिक को ज्यादा समस्या का सामना करना पड़ता हैं । यह स्थापित नहीं होता हैं। सारणी 5.6 मेन 1 सेल्स में मानक 5 से कम होने के कारण Chi-Square Test के परिणामों को मानी करने में बाधा उत्पन्न होती हैं।

मूलभूत शोध प्रश्नों के जवाब

ग्रामीण वृद्धजनों को कौन-कौन सी मनोसामाजिक समस्याएं आती है? उसका प्रमाण क्या है एवं यह कुल समस्याएं कौन-कौन चरोसे प्रभावित होती है?

आलेख 4.1 एवं सारणी 4.1 के अनुसार अनुमापन तंत्र द्वारा निर्माण किए गए प्रश्नों के उत्तर ग्रामीण वृद्धोजनों को 19 प्रश्न में से कुछ की जानकारी हैं। 60.0 प्रतिशत ग्रामीण वृद्धजन अपने जीवन से संतुष्ट हैं। 51.3 प्रतिशत उत्तरदाता अवसाद में रहते है। 48.7 प्रतिशत ग्रामीण वृद्धजन याददाश्त में कमी महसूस करते हैं। 56.5 प्रतिशत ग्रामीण वृद्धजन को वृद्धावस्था के कारण पर्याप्त नींद नहीं आती हैं। 54.8 प्रतिशत ग्रामीण वृद्धजन को स्वभाव में चिड़चिड़ापन आने लगा हैं। 39.1 प्रतिशत उत्तरदाता तनावग्रस्त रहते है। तथा 50.4 प्रतिशत वृद्धजन मित्रों को समय नहीं दे पाते है।जबकि 59.1 प्रतिशत वृद्धजन ध्यान केंद्रित नहीं कर पाते है। प्राप्त तथ्यों के आधार पर यह कहां जा सकता है कि मनोसामाजिक समस्या जानने के लिए जो प्रश्न पूछे गए हैं उसमें ग्रामीण वृद्धजनों को मनोसामाजिक समस्या है।

2. ग्रामीण वृद्धजनों की मनोसामाजिक और समायोजन के संदर्भ में क्या समाजकार्य हस्तक्षेप किया जा सकता हैं?

आलेख 4.1 एवं सारणी 4.1 के मनोसामाजिक समस्या प्रश्न के जवाब उप्पर दर्शाये गए हैं। आलेख 5.4 में यह दर्शाया गया कि 52 प्रतिशत लोगो को समायोजन की समस्या थोड़ी बहुत है। तथा 43 प्रतिशत व्रुद्धोजनों को समायोजन कि समस्या ज्यादा हैं। उम्र के हिसाब से सामाजिक समायोजन देखा जाये तो 72.7 प्रतिशत मध्य वरिष्ठ नागरिक को ज्यादा समस्या हैं। तथा आलेख 5.7 में कुल आर्थिक समायोजन में 89 प्रतिशत वृद्धजनों को समस्या थोड़ी बहुत है। जबकि 5 प्रतिशत उत्तरदाता को आर्थिक समायोजन की समस्या ज्यादा है। इससे यह प्रश्न का उत्तर यह निकाला है की सामाजिक समायोजन की समस्या ग्रामीण वृद्धजनों को अधिक है।

1.इसमें समाजकार्य हस्तक्षेप यह किया जा सकता हैं की जो भी भारत सरकार द्वारा कार्यक्रम लिए जाते हैं उसमें समाजकार्य करने वाले संस्थाओं के साथ मिलकर मनोसामाजिक एवं समायोजन के बारे में गांव में कार्यक्रम चलाये जाये ताकि गांव, परिवार में पता चल सके कि वृद्धजनों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए उनके साथ किस तरह से बात करनी चाहिए ताकि उनके मनपर कोई दबाव या कोई मानसिक तनाव न आ सके। उनके साथ अच्छा व्यवहार होना चाहिए।

2.और जो भी समाजकार्य के कॉलेज हैं जिनका कार्यक्रम गांव में जाता हैं उस कॉलेज से परमिशन निकालके हम समाजकार्यकर्ता वृद्धजन के साथ कैसा व्यवहार होना चाहिए उस कार्यक्रम के जरिए हम लोगो तक ये बात पहुंचाई जा सकती हैं।

निष्कर्ष :

बुजुर्गो को हमेशा से समाज में सन्मानपूर्ण और उच्च स्थान मिला है जिसमें संयुक्त परिवार ने एक महत्वपूर्ण साथ निभाया हैं। वृद्धों का हमेशा ख्याल रखा हैं और उनको हमेशा सुरक्षा मूल्य के विभिन्न भागों से जुड़ा रखा था। वर्तमान समय में औद्योगीकरण, शहरीकरण के कारण गांव के कुछ लोग शहर की और बढ़ रहे हैं उसी के कारण गांव में अपने माँ-बाप को छोड़कर शहर में रह रहे हैं। तथा कुछ नए पीढ़ी के विचार और पूराने पीढ़ी के विचार कुछ नहीं मिल पाते उसीके कारण वृद्धजन अलग रहते हैं। या वो वृद्ध हो गए तो उनकी तरफ कोई ज्यादा ध्यान नहीं दे पाता हैं। अभी महंगाई इतनी बढ़ने से मोलमजुरी करनेवाले परिवार का उनके मोलमजुरी से खर्चा हो नहीं पता उसीके कारण वो अपनी आवश्कताएं पूरी नहीं कर सकते तो वृद्धों की और वो दूर लक्ष्य करते हैं। वृद्धों को जब उनका निधि मिलता है तो बच्चे या पोते उनको परेशान करते हैं तो वो निधि भी उनको कम पड़ता है कभी कभी उसकी वजह से भी वृद्धजन हताश एवं चिड़चिड़ापन करने लगते हैं। इसकी वजह से वृद्ध की समस्या और भी बढ़ने लगती हैं। और अभी जीवन इतना भागदौड होने के कारण कोई वृद्धों से बात भी नहीं कर पाते उसीके वजह से उनको लगता हैं हमारे ऊपर कोई ध्यान नहीं देता हमसे कोई बात नहीं करता हमारा कोई मोल नहीं हैं ऐसा वृद्धजन को लगता हैं। उसीकी वजह से वृद्धजन अकेलापन या हताश महसूस करते हैं। वृद्धजनों के सामाजिक आर्थिक का स्थिति का पता चलता हैं कि सर्वाधिक पुरुष 58.3 प्रतिशत हैं और अधिक वरिष्ठ नागरिक 60 से 70 के बिच के है जिसमें सबसे अधि 87.8 प्रतिशत है और एक तिहाई से अधिक 30.4 प्रतिशत विभक्त परिवार में रहते हैं, जबकि 58.3 प्रतिशत संयुक्त परिवार में रहते है। सर्वाधिक वृद्धजन 44.3 प्रतिशत अनुसूचित जनजाति के अंतर्गत आते है। तीन चौथाई से अधिक 88.7 प्रतिशत वृद्धजन हिन्दू धर्म के हैं। तक़रीबन 33.0 प्रतिशत वृद्धजन साक्षर/पूर्व प्राथमिक हैं तो 5.2 प्रतिशत वृद्धजन उच्च माध्यमिक तक पढाई किये हुए हैं।
अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि जेंडर के हिसाब से स्त्री वृद्धजन को ज्यादा मनोसामाजिक समस्या हैं 12.5 प्रतिशत तथा स्त्री वृद्धजन की तुलना में थोड़ी बहुत पुरुष वृद्धजन को 89.6 प्रतिशत समस्या हैं। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि पुरुष वृद्धजन कि तुलना में स्त्री वृद्धजन को मनोसामाजिक समस्या से ज्यादा सामना करना पड़ता हैं। और उम्र के हिसाब से अति वरिष्ठ नागरिक 81 से 90 वर्ष को ज्यादा 33.3 प्रतिशत मनोसामाजिक समस्या का सामना करना पड़ता हैं। जबकि जेंडर के हिसाब से स्त्री वृद्धजन की तुलना में ज्यादा 47.8 प्रतिशत पुरुष वृद्धजन को समायोजन करना पड़ता हैं। तथा उम्र के हिसाब से मध्य वरिष्ठ नागरिक को 71 से 80 वर्ष को 72.7 प्रतिशत वृद्धजन को समायोजन का सामना करना पड़ता हैं। इससे यह स्पष्ट होता हैं कि उम्र के तथा जेंडर के हिसाब से मनोसामाजिक समस्या का सामना करना पड़ता हैं तथा उम्र के हिसाब से ही समायोजन करना पड़ता हैं।

समाजकार्य हस्तक्षेप

- इसमें समाजकार्य हस्तक्षेप यह किया जा सकता हैं की जो भी भारत सरकार द्वारा कार्यक्रम लिए जाते हैं उसमें समाजकार्य करने वाले संस्थाओं के साथ मिलकर मनोसामाजिक एवं समायोजन के बारे में गांव में कार्यक्रम चलाये जाये ताकि गांव, परिवार में पता चल सके कि वृद्धजनों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए उनके साथ किस तरह से बात करनी चाहिए ताकि उनके मनपर कोई दबाव या कोई मानसिक तनाव न आ सके। उनके साथ अच्छा व्यवहार होना चाहिए।

- जो संस्था वृद्धों के लिए काम कर रही हैं समाजकार्य कर्ता उनके साथ मिलकर गांव के पंचायत से मिलना चाहिए और उनको बताके गांव में ऐसी वृद्ध के लिए सार्वजनिक जगह बनायी जाये की वहां पे सब वृद्ध एकसाथ बैठ सके और अपनी बाते एक-दूसरे को बता सके ताकि उनके मनपर जो भी दडपण हैं वो कम करने में मदत कर सकता हैं। और उनका समायोजन भी अच्छेसे हो सके।
- और पंचायत से मिलकर गांव में जो वृद्धजन कर सके ऐसे काम कि व्यवस्था कर सकते है कि वृद्धजन बैठकर अपना काम भी करेंगे और उनका समय भी अच्छेसे जाएगा और उनको आर्थिक समस्या भी दूर होंगी।
- पंचायत के जरिए जो गांव में स्वास्थ के लिए कार्य करने वाले संस्था से समाजकार्य कर्ता मिलकर हर महीने गांव में आरोग्य शिविर भी फ्री लिया जाये ताकि वृद्धजन अपना चेकअप गांव में ही कर सके और उनको कोई चार्ज भी न लगे।

उत्तरदाताओं द्वारा दिए गए सुझाव

- ✓ वृद्ध के साथ अच्छा व्यवहार लोगो ने करना चाहिए इसलिए गांव में अलग से कार्यक्रम होने चाहिए।
- ✓ जो भी निधि वृद्धजनों को निधि मिलता है तो उसमें सरकार ने बढ़ोतरी करनी चाहिए।
- ✓ वृद्धजनों को गांव में दर्जा देना चाहिए ऐसे कार्यक्रम लेने चाहिए।
- ✓ वृद्धजनों का चेकअप हर महीने गांव में होना चाहिए।
- ✓ वृद्धजनों के लिए जो भी योजनाएँ आती हैं वो वृद्धजन तक पहुंचे ऐसी गांव में सुविधा होनी चाहिए।

शोधार्थी द्वारा दिए गए सुझाव

- ✓ गांव में पारिवारिक स्तर पर वृद्धों के प्रति व्यवहार को और भी संवेदनशील बनाने के लिए जो भी गांव में पंचायत के जरिए सभा ली जाती हैं उसमें लोगो को समय समय पर शिबिरों का आयोजन करने लोगो को उनके प्रति और भी जिम्मेदार बनाया जाना चाहिए।
- ✓ गांव में जो पंचायत हैं उसमें जो कार्यकर्ता हैं उसके जरिए संचार प्रणाली को और भी सुदृढ़ बनाने कि जरुरत है ताकि गांव के लोगों को वृद्धों से संबंधित विभिन्न सरकारी/गैर सरकारी योजनाओं, कार्यक्रमों की जानकारी वृद्धजनों को समय-समय पर उपलब्ध हो सके।
- ✓ व्रुद्धोजनों कि शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक स्वास्थ देखभाल को बढ़ावा देने के लिए गांव में पंचायत के कार्यकर्ता के जरिए समय-समय पर योग-प्रशिक्षण, शिविर का आयोजन होना चाहिए।
- ✓ गांव पंचायत के कार्यकर्ता के जरिए ऐसी सार्वजनिक व्यवस्था करनी चाहिए ऐसी सार्वजनिक व्यवस्था करनी चाहिए ताकि गांव के सभी वृद्ध स्थान पर मिल-बैठकर हंस-बोल सके, बातचीत कर सके और अपने सुख-दुःख को एक-दूसरे के साथ मिल-बांट सके।

- ✓ गांव के समुदाय के कार्यकर्ताओं ने उद्योगों को बढ़ावा देने की जरुरत है ताकि वृद्धजनों को बढ़ती उम्र में कही बाहर न जाकर गांव में ही किसी उत्पादक कार्य में उनके आर्थिक जीवन स्तर को बढाया जा सकता हैं

परिशिष्ट

प्रतिवादी संहिता (Respondent Code):			

म. ग.अं. हि. वि.द्वारा प्रायोजित

ग्रामीण व्रुद्धोजनों की मनोसामाजिक एवं समायोजन संबंधी समस्याएँ : (सेलू तहसील जिला वर्धा का क्षेत्रीय अध्ययन)

साक्षात्कार अनुसूची

डॉ. शंभू जोशी साहायक प्रोफेसर	शुभांगी उईके शोधार्थी

महात्मा गांधी फ्यूजी गुरुजी सामाजिक कार्य अध्ययन केंद्र
मानविकी और सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

आ। पहचान डेटा

1	उत्तरदाता का नाम:	
2	सम्पूर्ण पत्ता:	
3	संपर्क क्रमांक:	___/___/___/___/___/___/___/___/___/___/
4	साक्षात्कार तिथि:	____/____/2016
5	साक्षात्कारकर्ता का हस्ताक्षर:	

ब। शोध डेटा

ब1 : मुख्य सामाजिक, आर्थिक एवं संबंधित जानकारी (सामाजिक आर्थिक स्तर)

प्रश्न कोड	प्रश्न		उत्तर	**उत्तर कोड**
1	उत्तरदाता का जेंडर		1) पुरुष 2) स्त्री 3) अन्य	
2	उम्र		_____ वर्ष	
3	परिवार प्रकार		1) विभक्त 2) विस्तारित 3) संयुक्त	
4	जाति श्रेणी		1) विमुक्त जाती 2) घुमंतु जनजति 3) अनुसूचित जनजति 4) अनुसूचित जाति 5) अन्य पिछड़ा वर्ग 6) विशिष्ठ पिछड़ा वर्ग 7) सामान्य	
5	धर्म		1) हिन्दू 2) ईसाई 3) इस्लाम 4) बौद्ध 5) जैन 6) सिख अन्य लिखिए :_____	

6	शैक्षणिक स्तर	0) अशिक्षित 1) साक्षर / पूर्व प्राथमिक 2) प्राथमिक (1 to 4) 3) उच्च प्राथमिक (5 to 7) 4) माध्यमिक (8 to 10) 5) उच्च माध्यमिक 6) स्नातक 7) स्नातकोत्तर 8) एम.फिल./पीएच.डी	
7	व्यवसाय	0) बेरोजगार 1) श्रम 2) खेत मजदूर 3) सेवा 4) व्यापार ५) खेती अन्य लिखिए _____	

ब. 2. उत्तरदाताओं की मनोसामाजिक समस्याएँ :

उत्तर नीचे दिए हुए विकल्प कोड के अनुसार दिज़ीए (उत्तर कोड़ बॉक्स में देना है)

	3) पूर्णत: सहमत	2) सहमत	1) असहमत	0) कोई विचार नहीं	कोड
8	मैं अवसाद में रहता हूँ।				
9	मैं अपने जीवन से संतुष्ट नहीं हूँ।				
10	मैं अपने आपको असुरक्षित महसूस करता हूँ।				
11	मैं हताश एवं अकेलापन महसूस करता हूँ।				
12	मैं अपने आपको असहाय महसूस करता हूँ।				
13	मैं अपनी याददाश्त में कमी महसूस करता हूँ।				
14	किसी भी विषय पर मैं शीघ्र निर्णय नहीं ले पाता हूँ।				
15	मैं निरंतर चिंता में रहता हूँ।				
16	मुझमें अलगाव की भावना उत्पन्न हो रही हैं।				
17	सामान्यत: मैं दुखी रहता हूँ।				
18	वृद्धावस्था के कारण मुझे पर्याप्त नींद नहीं आती हैं।				
19	मैं खुद को दूसरों से अलग करने लगा हूँ।				
20	मेरे स्वभाव में चिड़चिड़ापन आने लगा हैं।				
21	मैं प्राय: तनावग्रस्त रहता हूँ।				
22	मैं मादक पदार्थो का सेवन करता हूँ।				
23	मैं अपने मित्रों को समय नहीं दे पाता हूँ।				
24	मैं अब ध्यान केन्द्रित नहीं कर पाता हूँ।				
25	वृद्धावस्था के कारण मैं अपने अंदर हीन भावना का अनुभव करता हूँ।				
26	दूसरे लोगों से मैं मेल-व्यवहार बनाने से कतराता हूँ।				
27	उत्तरदाताओं की कुल मनोसामाजिक समस्याएँ:			कुल योग	
				0) बिल्कुल नहीं (0 - 19) 1) थोड़ी बहुत (20 -38) 2) ज्यादा (39 - 57)	

ब. 3. उत्तरदाताओं का समायोजन:

ब. 3.1: उत्तरदाताओं का सामाजिक समायोजन

उत्तर नीचे दिए हुए विकल्प कोड के अनुसार दीजिए (उत्तर कोड़ बॉक्स में देना है)

3) पूर्णत: सहमत	2) सहमत	1) असहमत	0) कोई विचार नहीं	कोड

28	मैं अपने घर के आस-पास होने वाले सामाजिक कार्यक्रमों में सहभागी होने लगा हूँ।		
29	खाली समय बिताने हेतु मैं आजकल अपने मित्रगणों के साथ ज्यादा समय बिताने लगा हूँ।		
30	मैं नए मित्रगण बनाने के प्रयास करने लगा हूँ ।		
31	खाली समय में मैं धार्मिक कार्यो में सहभागी होने लगा हूँ।		
32	खाली समय में मैं अपने क्षेत्र में होने वाले रचनात्मक कार्यक्रमों में सहभागी होने लगा हूँ।		
33	समाज में अपने योगदान के बारे में मैं आजकल सोचने लगा हूँ।		
34	परिवार के सदस्यों के बीच मैं अपने आपको सुरक्षित महसूस करने लगा हूँ।		
35	समाज में मैं खुद को सुरक्षित महसूस करने लगा हूँ।		
36	मैं पारिवारिक निर्णय अब घर के युवाओं के साथ मिलकर लेने लगा हूँ।		
37	आजकल मैं स्वयं के लिए समय निकालने लगा हूँ।		
38	आजकल मैं अधिकांश समय लोगों के साथ बिताना पसंद करने लगा हूँ।		
39	उत्तरदाताओं का कुल सामाजिक समायोजन	कुल योग	
		0) बिल्कुल नहीं (0 -11) 1) थोड़ी बहुत (11 - 22) 2) ज्यादा (23 - 33)	

ब. 4. 2: उत्तरदाताओं का आर्थिक समायोजन

उत्तर नीचे दिए हुए विकल्प कोड के अनुसार दीजिए (उत्तर कोड़ बॉक्स में देना है)

3) पूर्णत: सहमत	2) सहमत	1) असहमत	0) कोई विचार नहीं	कोड
40	मैंने अपनी आवश्यकताएँ सीमित कर दी है।			
41	मैंने अपने व्यक्तिगत खर्चों को सीमित कर दिया है।			
42	मैं घर के आर्थिक मामलो में हस्तक्षेप नहीं करता हूँ।			
43	मैं बच्चों द्वारा जेब खर्च के लिए दी गई राशि से संतुष्ट रहने लगा हूँ।			
44	स्वयं की बचत से मैं अपना व्यक्तिगत खर्च चलाने लगा हूँ।			
45	परिवार एवं स्वयं के खर्च हेतु मैं मजदूरी/प्राइवेट जॉब करने लगा हूँ।			
46	मैं अपने पैसों का हिसाब बच्चों को देने लगा हूँ।			
47	उत्तरदाताओं का कुल आर्थिक समायोजन	कुल योग		
		0) बिल्कुल नहीं (0 -7) 1) थोड़ी बहुत (8 -14) 2) ज्यादा (15 -21)		

संदर्भ ग्रन्थ सूची

किताब

- लाल, व. (2008). *वृद्धावस्था का सच .* नई दिल्ली : कल्याणी शिक्षा परिषद् .
- तेजेस्कर, तेज. (2010). *समाजकार्य के क्षेत्र .* लखनऊ : पाण्डेय भारत प्रकाशन .
- शुक्ला, अ. (2007). *वृद्धावस्था की स्वास्थ समस्याएँ.* लखनऊ : हासपाइस सोशल वेलफेयर सोसायटी .
- चतुर्वेदी, स. (2001). *हिंदू परिवारों के परिवर्तित प्रतिमान .* जयपुर : शशि प्रकाशन .
- रावत, ह. (2013). *सामाजिक शोध की विधियां.* जयपुर : रावत पब्लिकेशन्स .

लघु शोध प्रबंध

सयाम, विशाल. (2014). वृद्धों को आनेवाली शारीरिक,मानसिक एवं सामाजिक समायोजन का अध्ययन . *शिक्षा शोध अनिकेत समाजकार्य महाविद्यालय वर्धा.*

थुल, रजनी. (2016). वृद्धजनों में जीवन की गुणवत्ता का अध्ययन सन्दर्भ: कारला गांव, जिला वर्धा (महाराष्ट्र) . *परियोजना शिक्षा शोध* , 35-39 .

इंटरनेट

- http://gadyakosh.org/बुजुर्गों_की_समस्याएँ_/_सत्य_शील_अग्रवाल
- http://gadyakosh.org/ /वृद्धावस्था_की_समस्याओं_के_कारण_/_सत्य_शील_अग्रवाल
- **http://iaslogics.blogspot.in/2014/08/Older-persons-and-their-position-in-India.html**
- http://pustak.org/books/bookdetails/1586
- http://hindi.webdunia.com/my-blog/international-day-of-older-116100100040_1.html
- http://hi.vikashttp://pib.nic.in/newsite/hindifeature.aspx?relid=24606pedia.in/social-welfare/92894092493f92f93e901-90f935902-

91593e93094d92f91594d93092e/93594392694d92791c92894b902-915940-92894092493f92f93e901-935-92f94b91c92893e92f947902/93093e93794d91f94d93094092f-93594392694d92791c928-92894092493f

- http://pib.nic.in/newsite/hindifeature.aspx?relid=24606
- http://seniorcitizenawareness.blogspot.in/2015/05/blog-post_14.html
- https://www.pravakta.com/due-to-the-problems-of-senior-citizens-problems-and-solutions/
- https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%85%E0%A4%B5%E0%A4%B8%E0%A4%BE%E0%A4%A6
- http://www.drishtiias.com/hindi/mains-exam-paper-explanation/a-dissatisfied-man-is-better-than-a-satisfied-pig
- http://www.lokmat.com/maharashtra/old-unsafe-shocking-reality-state-21410-cases-filed
- https://www.jagran.com/punjab/chandigarh-14255739.html
- https://hi.glosbe.com/hi/en/%E0%A4%A6%E0%A5%81%E0%A4%83%E0%A4%96%E0%A5%80%20%E0%A4%AE%E0%A4%B9%E0%A4%B8%E0%A5%82%E0%A4%B8%20%E0%A4%95%E0%A4%B0%E0%A4%A8%E0%A4%BE
- https://www.myupchar.com/disease/poor-memory
- http://livepathshala.com/blog/take-right-decision-valuable-tips-hindi
- https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%9A%E0%A4%BF%E0%A4%82%E0%A4%A4%E0%A4%BE
- https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%85%E0%A4%95%E0%A5%87%E0%A4%B2%E0%A4%BE%E0%A4%AA%E0%A4%A8
- https://hindi.speakingtree.in/blog/content-539060
- https://www.bhaskar.com/news/ABH-knowledge-bhaskar-5257305-NOR.html
- http://www.lifeitgoeson.in/2017/05/Self-Motivational-Kya-aap-dusron-se-darte-hai-.html

- http://www.hi.rowland98.com/psihologiya/85226-razdrazhitelnost-prichiny.html
- https://www.google.com.in/search=प्राय%3A+तनावग्रस्त&rlz=1C1CHZL_
- http://www.mahashakti.org.in/2015/07/The-loss-drugs.html
- http://www.hindikiduniya.com/essay/friendship-essay-in-hindi
- https://www.hi.wikipedia.org/wiki/ध्यान
- http://websitekaisebanaye.com/tag/%E0%A4%B9%E0%A5%80%E0%A4%A8-%E0%A4%AD%E0%A4%BE%E0%A4%B5%E0%A4%A8%E0%A4%BE-%E0%A4%95%E0%A4%BE-%E0%A4%AE%E0%A4%A4%E0%A4%B2%E0%A4%AC/
- http://www.acchibaat.com/what-is-behavior-in-hindi
- http://www.streekaal.com/2014/10/blog-post_29.html
- https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%9C%E0%A4%BE%E0%A4%A4%E0%A4%BF
- https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%AD%E0%A4%BE%E0%A4%B0%E0%A4%A4_%E0%A4%AE%E0%A5%87%E0%A4%82_%E0%A4%A7%E0%A4%B0%E0%A5%8D%E0%A4%AE